3 अक्टूबर 2018 को Constitution Club में श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य, लोक सभा के जीवन पर इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया स्टडीज, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित पुस्तक के विमोचन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

———

1. मुझे आज यहाँ श्री भर्तृहरि महताब द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में एवं संसद के प्रति किए गए असाधारण योगदान को देखते हुए उनके सम्मान में **इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया स्टडीज, भुवनेश्वर** द्वारा प्रकाशित पुस्तक के विमोचन समारोह में भाग लेकर बहुत खुशी हो रही है। इस अवसर पर मैं आप सभी के साथ श्री महताब जी को बधाई देती हूँ।

2. श्री भर्तृहरि महताब हमारी संसद के एक वरिष्ठ एवं लोकप्रिय सांसद हैं और किसी भी विषय पर अभ्यास करके बहुत ही तर्कपूर्ण और सुलझे हुए विचार रखते हैं। वे एक बुद्धिजीवी एवं गहन विचारक हैं एवं विभिन्न सामाजिक विषयों पर गहरी समझ रखते हैं। 25 से भी अधिक वर्षों से वे लोक सभा में ओडिशा में कटक निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं एवं अपने प्रत्युत्पन्नमतित्व, सद्व्यवहार एवं परिपक्वता के लिए जाने जाते हैं। उनकी बातों को पक्ष एवं प्रतिपक्ष, दोनों तरफ के लोग बड़ी तन्मयता से

सुनते हैं। लोकतांत्रिक परम्परा के धुर समर्थक हैं। यह जनता में उनकी लोकप्रियता एवं विश्वास का प्रमाण है कि लगातार पांच बार से वे बीजू जनता दल के टिकट पर लोक सभा सदस्य निर्वाचित हुए हैं एवं वर्तमान में वे बीजू जनता दल संसदीय दल के नेता हैं। वे मुश्किल परिस्थिति में भी सौम्य बने रहते हैं, उनमें बहुत धीरज है एवं सदैव न्यायोचित बात करते हैं। वर्तमान परिवेश में ऐसा आचरण एवं सद्व्यवहार करना थोड़ा मुश्किल होता है।

3. श्री महताब को अपने पिता डॉ. हरेकृष्ण महताब की समृद्ध परंपरा विरासत में मिली है। उनके पिता एक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी और संविधान सभा के सदस्य थे। वे केन्द्रीय मंत्री और अविभाजित बॉम्बे प्रांत के राज्यपाल के अतिरिक्त ओडिशा के पहले मुख्यमंत्री भी थे। वे प्रसिद्ध ओडिया दैनिक **'द प्रजातंत्र'** के संस्थापक भी थे। उन्हें राजनीति के क्षेत्र के साथ ही पत्रकारिता जगत में भी उनकी लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता था। श्री महताब को ये सभी गुण अपने पिता से प्राप्त हुए हैं और विगत वर्षों में वह जिस क्षेत्र से भी जुड़े रहे हैं, उसमें उन्होंने सर्वोत्तम प्रदर्शन किया है।

4. श्री भर्तृहरि महताब के लिए सामाजिक कार्य और राजनीतिक कार्यकलाप एक स्वाभाविक पसंद थी। सक्रिय राजनीति में आने से पहले उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में निष्ठापूर्वक कार्य किया और स्वयं अपने लिए तथा अपने पिता द्वारा शुरू किये

गये दैनिक पत्र के लिए ख्याति अर्जित की। एक जिज्ञासु पाठक और बहुविध लेखक श्री महताब की बहुत–सी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

5. उनके साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यकलापों की ख्याति न केवल ओडिशा में बल्कि पूरे देश में फैली हैं। विविध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में सक्रियता से सम्मिलित होकर वे ओडिशा की समृद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन कार्य में निरंतर लगे हैं। यह बहुत सराहनीय है।

6. वे वर्ष 1998 में पहली बार संसद के लिए निर्वाचित हुए थे और तब से लगातार पांच बार सांसद चुने गए हैं। उन्हें वर्ष 2017 के लिए उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार प्रदान किया गया है। तथ्यों और मामलों के सटीक विश्लेषण, विभिन्न विषयों की उनकी गहन जानकारी एवं समझ, Parliamentary Practice and Procedure में उनकी सिद्धहस्तता, उनकी हाजिरजवाबी और उनके गरिमापूर्ण भाषणों के कारण उन्हें सभा के हर वर्ग से प्रशंसा प्राप्त हुई है।

7. हमारा लोकतंत्र दुनिया का सबसे जीवन्त लोकतंत्र है और अपने लोक सभा क्षेत्र, प्रदेश और जनता के हितों के लिए विभिन्न राजनीतिक दल और संसद सदस्य पूरे जोशोखरोश से संसद में मुद्दे उठाते हैं और अपनी बात रखते हैं और इस प्रक्रिया में कभी–कभार सदन में वाद–विवाद एवं शोरगुल का वातावरण भी निर्मित होता है और स्पीकर के रूप में मेरे सामने कठिन चुनौती आती है कि सभी सदस्यों की भावनाओं का सम्मान करते हुए और पक्ष–विपक्ष में न्यायोचित संतुलन बनाकर सदन की कार्यवाही को

कैसे सुचारू रूप से चलाया जाए? इसलिए मुझे कई बार सदस्यों को टोकना भी पड़ता है और उन्हें समझाइश भी देनी होती है कि वे अपने आचरण को मर्यादित रखें। इस संबंध में, मैं कहना चाहती हूँ कि मुझे श्री महताब को टोकने का कभी भी मौका नहीं मिला। वे अत्यंत मृदुभाषी और अनुशासित हैं एवं संसदीय आचारों और सिद्धांतों का सदैव निष्ठापूर्वक एवं अक्षरशः पालन करते हैं। वे संसद में अन्य सदस्यों की भावनाओं को आहत किये बिना अपने दल के दृष्टिकोण को मजबूती से और पुरजोर तरीके से प्रस्तुत करने की अपनी योग्यता के लिए जाने जाते हैं। वह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी संसद के दृष्टिकोणों को भी स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते रहे हैं।

8. मुझे उनके साथ पूर्व में संसद सदस्य के रूप में एवं अब पीठासीन अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मिला है। मैंने हमेशा उनकी ओर से सहृदयतापूर्ण व्यवहार, रचनात्मक चर्चा व अंतरसंवाद की उम्मीद की है और हमेशा वे इस उम्मीद पर खरे उतरे हैं। उनको जटिल मुद्दों की स्पष्ट समझ हैं एवं उन्होंने संसद के कार्यकरण में अपनी भूमिका से निश्चय ही संसदीय चर्चाओं का स्तर उठाया है। ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंटरी स्टडीज (Bureau of Parliamentary Studies) में अपने व्याख्यानों के माध्यम से उन्होंने संसदीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपने व्यावहारिक अनुभवों के साथ–साथ नए लोगों को संसदीय प्रक्रियाओं एवं विषयों की जानकारी से अवगत कराने का काम भी बखूबी किया है जिससे लोकतंत्र की जड़ें और गहरी होंगी। Speakers Research

Initiative में भी उनके विषय विशेष पर दी गई जानकारियों से संसद सदस्य लाभान्वित हुए हैं।

9. एक सांसद के रूप में आपको तब असीम संतोष प्राप्त होता है जब आपके कार्य की प्रशंसा संसद के बाहर हो और आपको आपके अनुकरणीय आचरण के लिए पहचाना जाए। कुछ ही सांसद ऐसा सम्मान और ऐसी ख्याति प्राप्त कर पाते हैं। जो प्रतिष्ठा आपने अर्जित की है और उसके लिए मैं बहुत प्रसन्न हूं।

10. शास्त्रों में वर्णित हैः–

''विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।''

(इसका अर्थ है कि विद्वान एवं राजा की तुलना नहीं की जा सकती। राजा स्वदेश में पूजा जाता है जबकि विद्वान का सर्वत्र सम्मान होता है।)

श्री भर्तृहरि महताब जी ऐसे विद्वान हैं जिनका सभी दलों के सदस्यगण, चाहे वे पक्ष अथवा विपक्ष के हों, बहुत सम्मान करते हैं एवं उनके विचारों को महत्व देते हैं। इनके कृतित्व को दृष्टिगत रखते हुए ही यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

11. यह प्रकाशन बोधगम्य (understandable) होते हुए भी सारगर्भित है और श्री महताब के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में अच्छी जानकारी प्रदान करता है तथा निस्संदेह यह एक काफी उपयोगी प्रकाशन भी है क्योंकि यह हमारी लोकतात्रिक संस्था के काम–काज की झलक भी प्रस्तुत करता है।

12. इस पुस्तक में विशिष्ट सांसदों, प्रख्यात शिक्षाविदों, पत्रकारों तथा विभिन्न क्षेत्रों के सुप्रसिद्ध लोगों ने श्री महताब के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। संसद में और अन्य मंचों पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर बात रखने के लिए अनेक विषयों पर व्यापक क्षेत्रों में श्री महताब की वाक्पटुता, विचारों की सुस्पष्टता और विद्वता का भली–भांति उपयोग किया गया है। संसद में श्री महताब द्वारा दिये गए चुनिंदा भाषणों को पढ़ना रुचिकर है क्योंकि उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल विधेयक से लेकर बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार, बढ़ती असहिष्णुता, भारत–अमेरिका Nuclear समझौता जैसे अनेक विषयों पर विद्वतापूर्वक अपनी बात रखी है।

13. **इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया स्टडीज, भुवनेश्वर** द्वारा श्री भर्तृहरि महताब के जीवन पर इस पुस्तक को प्रकाशित करने की पहल निस्संदेह सराहनीय है। इस प्रकाशन से न केवल बहुत से लोग प्रेरित होंगे अपितु बहुत–से लोग श्री महताब के सार्वजनिक जीवन का अनुकरण करते हुए जन–सेवा के क्षेत्र में आने को भी प्रोत्साहित होंगे।

14. Limelight में न रहते हुए भी उन्होंने जिस सादगी एवं सरल भाषा से अपने विचारों का प्रसार आम जनता में करने में कामयाबी पाई है, वह निश्चय ही प्रशंसा योग्य है। मुझे आशा है कि भविष्य की बृहत्तर जिम्मेदारियों के लिए वे निश्चय ही योग्य, स्वाभाविक एवं पहली पसंद होंगे।

15. मैं इस पुस्तक के प्रकाशन की सफलता के साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं।

धन्यवाद।

———————